



॥ श्री सालासर बालाजी की आरती ॥

जयति जय जय बजरंग बाला, कृपा कर सालासर
वाला । ॥ टेक ॥
चैत सुदी पूनम को जन्मे, अंजनी पवन खुशी मन में ।
प्रकट भय सुर वानर तन में, विदित यस विक्रम
त्रिभुवन में ।
दूध पीवत स्तन मात के, नजर गई नभ ओर ।
तब जननी की गोद से पहुंचे, उदयाचल पर भोर ।
अरुण फल लखि रवि मुख डाला । ॥ कृपा कर
सालासर वाला ॥ 1 ॥
तिमिर भूमण्डल में छाई, चिबुक पर इन्द्र बज बाए ।
तभी से हनुमत कहलाए, द्वय हनुमान नाम पाये ।
उस अवसर में रुक गयो, पवन सर्व उन्चास ।
इधर हो गयो अन्धकार, उत रुक्यो विश्व को श्वास ।
भये ब्रह्मादिक बेहाला । ॥ कृपा कर सालासर वाला ॥
2 ॥
देव सब आये तुम्हारे आगे, सकल मिल विनय करन
लागे ।
पवन कू भी लाए सागे, क्रोध सब पवन तना भागे ।
सभी देवता वर दियो, अरज करी कर जोड़ ।
सुनके सबकी अरज गरज, लखि दिया रवि को छोड़ ।
हो गया जगमें उजियाला । ॥ कृपा कर सालासर वाला
॥ 3 ॥
रहे सुग्रीव पास जाई, आ गये बनमें रघुराई ।
हरिरावण सीता माई, विकल फिरते दोनों भाई ।
विप्ररूप धरि राम को, कहा आप सब हाल ।
कपि पति से करवाई मित्रता, मार दिया कपि बाल ।
दुःख सुग्रीव तना टाला । ॥ कृपा कर सालासर वाला ॥
4 ॥
आज्ञा ले रघुपति की धाया, लंक में सिन्धु लाँघ आया ।

हाल सीता का लख पाया, मुद्रिका दे बनफल खाया ।
बन विध्वंस दशकंध सुत, वध कर लंक जलाया ।
चूड़ामणि सन्देश त्रिया का, दिया राम को आय ।
हुए खुश त्रिभुवन भूपाला । ॥ कृपा कर सालासर वाला
॥ 5 ॥
जोड़ कपि दल रघुवर चाला, कटक हित सिन्धु बांध
डाला ।
युद्ध रच दीन्हा विकराला, कियो राक्षस कुल पैमाला ।
लक्ष्मण को शक्ति लगी, लायौ गिरी उठाय ।
देई संजीवन लखन जियाये, रघुवर हर्ष सवाय ।
गरब सब रावन का गाला । ॥ कृपा कर सालासर वाला
॥ 6 ॥
रची अहिरावन ने माया, सोवते राम लखन लाया ।
बने वहाँ देवी की काया, करने को अपना चित चाया ।
अहिरावन रावन हत्यौ, फेर हाथ को हाथ ।
मन्त्र विभीषण पाय आप को, हो गयो लंका नाथ ।
खुल गया करमा का ताला । ॥ कृपा कर सालासर
वाला ॥ 7 ॥
अयोध्या राम राज्य कीना, आपको दास बना लीना ।
अतुल बल घृत सिन्दूर दीना, लसत तन रूप रंग भीना ।
चिरंजीव प्रभु ने कियो, जग में दियो पुजाय ।
जो कोई निश्चय कर के ध्यावै, ताकी करो सहाय ।
कष्ट सब भक्तन का टाला । ॥ कृपा कर सालासर
वाला ॥ 8 ॥
भक्तजन चरण कमल सेवे, जात आय सालासर देवे ।
ध्वजा नारियल भोग देवे, मनोरथ सिद्धि कर लेवे ।
कारज सारो भक्त के, सदा करो कल्याण ।
विप्र निवासी लक्ष्मणगढ़ के, बालकृष्ण धर ध्यान ।
नाम की जपे सदा माला, कृपा कर सालासर । ॥ 9 ॥

और भी आरती व चालीसा देखने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें:

<https://bhaktimargdarshan.com/>

हम आशा करते हैं कि यह सामग्री आपके लिए उपयोगी रही होगी ।
अगर आपको यह पसंद आई हो, तो इसे अपने परिवार और मित्रों के साथ जरूर साझा करें ।

Bhakti Margdarshan

